मुगल काल में सामाजिक अवस्था

मुगल काल में सामाजिक जीवन में इतने अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुए, जितने कि राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में हुए। मुगल काल की सामाजिक दशा जानने के साधनों का अत्यन्त अभाव है। केवल यूरोपीय यात्रियों के विवरण द्वारा ही हमें तात्कालिक मुगलकालीन समाज के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान होता है। पेशे एवं आर्थिक दशा के अनुसार समाज तीन वर्गों में विभक्त था। इन तीन वर्गों के जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर था, जहां एक ओर उच्च वर्ग के लोग सुरा-सुन्दरी में दिन-रात डूबे रहते थे, वहीं दूसरी ओर निम्न वर्ग के लोगों को जीवन-निर्वाह के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता था।

उच्च वर्ग

राजा के नीचे उच्च वर्ग के अमीर और ऊंचे अधिकारी आते थे। फ्रांस के सामन्तों की तरह इनका जीवन बड़ा ऐश्वर्यपूर्ण था। समाज में इनकी भांति-भांति के अधिकार एवं सम्मान प्राप्त थे। इनके जीवन का मुख्य उद्देश्य भोग-विलास था। जहां इनसे एक ओर विद्यानुराग, कलाप्रेम तथा दानशीलता जैसे गुण विद्यमान थे, वहां इनके चरित्र में अनेक दुर्बलताएं भी थीं।

मध्यमवर्ग - इनकी संख्या उच्च वर्ग और निम्न वर्ग से कम थी। इस वर्ग में व्यापारी और सरकारी कर्मचारी थे। इनका जीवन सादा था। पश्चिमी घाट के कुछ व्यापारी, जिन्होंने पर्याप्त धन अर्जित कर लिया था, अपेक्षाकृत अधिक सुखमय जीवन व्यतीत करते थे।

निम्नवर्ग- निम्नवर्ग में साधारण सेवक, दस्तकार और निम्न श्रेणी के किसान एवं मजदूर आदि आते थे। इन्हें बहुत कम मजदूरी मिलती थी। फलतः इनका जीवन धन से उत्पन्न होने वाली बुराईयों से दूर था। निम्न वर्ग के लोगों का जीवन सीधा-सादा था और उनमें जागृति का प्रायः अभाव था।

Sem-2 CC-8

Scanned with CamScanner

इसलिए वे चुपचाप अपना जीवन व्यतीत करके चले जाते थे। मुगलकाल के लोगों के जीवन में सामाजिक असमानता विद्यमान थी और भिन्न-भिन्न श्रेणियों का जीवन भिन्न-भिन्न स्तर का था।

सामाजिक कुरीतियां- भारतीय समाज में अनेक कुरीतियां विद्यमान थीं, पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा प्रचलित थी। यद्यपि अकबर जैसे सम्राट ने इन्हें रोकने का प्रयास किया, परन्तु उसे कोई विशेष सफलता नहीं मिली। बाल विवाह का प्रचलन था। लड़कियों की शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। धन के लोभ में कुलीन लोग कई विवाह कर लिया करते थे, क्योंकि दहेज की प्रथा प्रचलित थी। छूआछूत का भूत समाज में व्यापक रूप ले चुका था जिससे अछूतों का जीवन नारकीय हो गया था। जाति प्रथा भी अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी। अन्त में यदि मुगलकालीन समाज का सिंहावलोकन करें तो ज्ञात होता है कि समाज में अनेक कुरीतियां आ गई थीं जिससे साधारण जनता का जीवन कष्टमय हो गया था।

Scanned with CamScanner